ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-2*March- 2018
Innovation The Research Concept

1857 के बागी पाँच गाँव (कुम्हैड़ा, खिंदौड़ा, भनेड़ा, सुहाना, गयासपुर)

मुदित कुमार
प्रवक्ता,
इतिहास विभाग,
एस0 एस0 एस0 एस0 (पी0 जी0) कॉलेज,
रासना, मेरठ

सारांश

1857 की क्रान्ति आधुनिक भारतीय इतिहास की एक महान घटना है। इसके द्वारा सर्वप्रथम विदेशी सत्ता को उखाड़ फेकने के लिए भारतीयों ने धर्म, जातिगत विभेद से ऊपर होकर प्रयत्न किया। इसमें लगभग 3 लाख महिला, पुरुष, बूढ़े, बच्चे, किसी न किसी प्रकार हताहत हुए। मेरठ मंडल मे अनेक गाँवों के ग्रामीणों ने बिना किसी लालच के क्रान्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

इन गाँवों में खिंदौड़ा, गयासपुर, कुम्हैड़ा, भनेडा एवं सुहाना भी शामिल थे। ये गाँव त्यागी बहुल है। क्रान्तिकारी घटनाओं को अंजाम देने के कारण अग्रेजों ने इन पाँचों गाँवों को बागी घोषित कर दिया गया जिसके कारण यहाँ के ग्रामीणों को अत्यधिक परेशानी का सामना करना पड़ा ।

मुख्य शब्द : क्रान्ति, कान्हा, चारज, कपड़े का फैंचा, छत्ता, बागी, प्रस्फुटित, कारबाइन्स।

प्रस्तावना

10 मई को मेरठ में क्रान्ति के प्रस्फुटित होने की सूचना आस– पास के ग्रामीण क्षेत्र में फैल गयी। स्थान–स्थान पर ग्रामीणों ने अंग्रेजी सरकार का विरोध करते हुए क्रान्ति में अपनी–अपनी तरह से भागादारी निभायी। मेरठ मण्डल के गाजियाबाद जिले की मोदीनगर तहसील के निकटवर्ती गाँवों कुम्हैड़ा, खिंदौड़ा, भनेड़ा, सुहाना और गयासपुर के ग्रामीणों ने भी क्रान्ति में भाग लिया। ये गाँव त्यागी बहुल हैं।

यहाँ यह बिन्दु विशेष रुप से उल्लेखनीय है कि जहाँ विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न – भिन्न कारणों से प्ररित होकर वहाँ की जनता ने क्रान्ति में भाग लिया वहीं यहाँ के त्यागी जमींदारों के समक्ष ऐसा कोई कारण उपस्थित नहीं था। इस क्षेत्र में न तो धर्म को लेकर घबराहट थी और न ही अंग्रेजों की आर्थिक नीति के कारण रोष ही था। इसलिए यहाँ के त्यागी जमींदारों की क्रान्ति में भागीदारी को निश्चित रुप से राष्ट्रीयता का प्रतीक माना जाना चाहिए ।

10 मई को मेरठ में क्रान्तिकारी सैनिकों ने विप्लवकारी घटनाओं को अंजाम देते हुए प्रशासनिक व्यवस्था को अस्त–व्यस्त कर दिया। क्रान्तिकारी सैनिकों ने रात्रि में ही दिल्ली के लिए प्रस्थान कर दिया[1] और 11 मई को शहर पर अधिकार कर लिया। 11 मई की रात्रि में बहादुर शाह 'जफर' को क्रान्तिकारियों द्वारा देश का सम्राट घोषित कर दिया गया।[2]

परन्तु मैगजीन ने आसानी से आत्मसमर्पण नहीं किया। मैगजीन का अधिकारी लेफ्टिनेंट विलोग्बी आठ बहादुर अंग्रेजों की मदद से बदहवास क्रान्तिकारियों के विरुद्ध घंटो मोर्चा खोले रहा। लेकिन देर तक नहीं लड़ पाने की सम्भावना एवं शास्त्रागार की रक्षा करने मे स्वयं को असमर्थ जानकर लेफ्टिनेंट विलोग्बी ने उसमें विस्फोट कर दिया।[3] उस विस्फोट ने जहाँ सैकड़ों क्रान्तिकारियों की जान ले ली वहीं नौ अंग्रेजों में से तीन अपनी चौकी पर ही मारे गये। विलोग्बी एवं अन्य पाँच अंग्रेज अपनी जान बचाने के लिए दिल्ली से मेरठ की ओर भाग निकले।[4] दुहाई ग्राम (दुहाई, गाजियाबाद–मेरठ मुख्य मार्ग पर अवस्थित त्यागी बहुल गाँव है। यह ग़ाज़ियाबाद ज़िला मुख्यालय से मेरठ की ओर 7 किलोमीटर की दूरी पर है) आने के पश्चात् उन्होंने दिल्ली – मेरठ मुख्य मार्ग छोड़ दिया। उन्होंने आगे जाने के लिए नहर का रास्ता चुना। सम्भवतः उन्हे इस बात का यकीन था कि सिंचाई विभाग का कार्यालय नहर पर अवश्य ही अवस्थित होगा जहाँ से उन्हें मदद मिल जायेगी। अतः वे दुहाई गाँव के मध्य से निकली नहर की पटरी पर उत्तर दिशा की ओर चलने लगे। कुछ दूरी पर चलने के पश्चात् ये लोग कुम्हैड़ा गाँव के निकट 'झाल' (यहाँ झाल शब्द

का तात्पर्य उस स्थान से है जहाँ बड़ी नहर से कई छोटी नहरें निकाली गयी हैं) नामक स्थान पर पहुँचे। यहाँ कुम्हैडा गाँव के निवासी कान्हा का बाग (यह बाग कुम्हैडा़ गाँव के त्यागी जमींदार ने अपनी पूर्वज की मृत्यपरान्त उसकी आरिष्टि में कान्हा के पूर्वजों को दान में दिया था), कान्हा जाति से 'चारज' था। इस बाग में एक कुआँ था। यद्यपि इसका पानी ठंडा व मीठा था परन्तु जिस पटरी पर अंग्रेज थे वह उस ओर न होकर पटरी के दूसरी तरफ था। ग्रामीण जंगल में आने पर उस कुएँ का पानी पीते थे। जब अंग्रेजों के दल ने कुएँ को देखा तो वह वहाँ पानी पीने के लिये रुक गये।[5] वैसे भी प्यास के कारण उनका बुरा हाल था। परन्तु कुएँ के दूसरी ओर स्थित होने के कारण उनमें से एक अंग्रेज ने उसके नजदीक विश्राम करते हुए कान्हा को देखकर कहा कि 'बाबा! हमें प्यास लगी है, पानी पिलाओगे। उस अंग्रेज की बात सुनकर कान्हा ने कहा कि 'कुएँ का पानी पीने के लिए ही है, नहर पार करके इधर ही आ जाओ। 'प्यास से व्याकुल अंग्रेजों ने नहर में चलते पानी को देखकर शंकावश उससे कहा कि 'हमें नहर में डुबोवेगा? इधर आकर ही पानी पिला दे तो ठीक रहेगा। 'यद्यपि कान्हा प्रौढ था परन्तु फिर भी उसने नहर पार करके उन्हें पानी पिलाया।[6] पानी पीने के पश्चात् जब अंग्रेज वहाँ से आगे चलने लगे तब कान्हा ने उनके पास राइफलें (कारबाइन्स) देखीं, जिन्हें अंग्रेज अपनी रक्षा के लिए ले रहे थे। उन्हें देखकर उसने पूछा कि 'यू क्या है? इसमें तो म्हारे मालिक (त्यागी जमींदार) जुआँ बनवा लेंगे। इसमें एक ओर तो काछवाँ सा है ही, दूसरी ओर भी ऐसा ही जड़वा लेंगे। 'उसने राइफल में लोहे की नाल को देखकर कहा। तब एक अंग्रेज ने कहा कि ''बाबा यह तो बन्दूक है। यह तो हमारा हथियार है। ''तब कान्हा बोला कि 'अगर तुम लोगों ने मुझे यह नहीं दी तो मैं शोर मचा दूँगा। 'अंग्रेजों ने उसे समझाने की कोशिश की परन्तु वह अपनी माँग पर अड़ा रहा ।[7]

अंग्रेजों के समक्ष यह नई मुसीबत आ गयी थी। उन्होंने वक्त की नजाकत को देखते हुए उसे और अधिक समझाना उचित न समझा और वहाँ से तेजी से चल दिये। कान्हा भी राइफल माँगते हुए उनके पीछे भाग पड़ा। लगभग 1 कि0 मी0 की दूरी चलने पर इस नहर का पुल था। यहाँ से भनेडा़ गाँव निकट ही है। कान्हा इस स्थान तक उनका पीछा करता रहा। तब एक अंग्रेज ने कहा कि ''ये ऐसे नहीं मानेगा। ''उनमें से एक अंग्रेज ने चाँदी के रुपये कपड़े के फैचे (फैचा कपड़े का होता है। यह तीन तरफ से सिला होता है तथा एक ओर से खुला होता है, एक लम्बी जेब की तरह) में भरकर कान्हा के सिर पर जोर से मार दिये। वह फैचा उसकी कनपटी पर लगा। कान्हा ने जोर से चीख मारी। उस जबरदस्त प्रहार से उसका कान कट गया। उसके सिर में भी अत्यधिक चोट आयी , जिससे वह वहीं मर गया।[8]

कान्हा की मृत्यु के सम्बन्ध में ग्रामीणों से लिये साक्षात्कारों से दूसरी जानकारी भी मिलती है कि अंग्रेजों ने उसे बन्दूक से गोली मार दी और गोली लगने से उसकी मृत्यु हुई।[9]

यद्यपि घटना कुछ भी घटित हुई हो लेकिन कान्हा वहीं मारा गया । कान्हा की चीख अथवा गोली चलने की आवाज सुनकर ग्रामीण जेली, फावड़ा, दराती आदि खेतों में प्रयुक्त होने वाले औजारों को लेकर हो – हल्ला करते हुए 'मारो फिरंगी को' कहते हुए अंग्रजों के पीछे दौड़ पडे। सर्वप्रथम कुम्हैड़ा एवं भनेड़ा ग्रामों के ग्रामीण उन अंग्रेजों को मारने के लिए दौड़े क्योंकि ये दोनों ग्राम घटना स्थल के नजदीक थे। तत्पश्चात् इन दोनों ग्रामों के ग्रामीणों की आवाज सुनकर क्रमशः सुहाना, गयासपुर और खिंदौड़ा के ग्रामीणों ने भी अंग्रेजों को चारों ओर से घेरना शुरु कर दिया।[10]

यह घटना मई में घटित हुई थी और उस समय मक्का खेतों में बोयी जा रही थी। गेहूँ की काटी गयी फसल पर दाँय चलाई जा रही थी। अतः जंगल में ग्रामीण कृषको की संख्या काफी थी। ये जंगल में काम करने वाले ग्रामीण ही सर्वप्रथम उस दिशा में दौड़े थे, जिस ओर से कान्हा की चीख या गोली चलने की आवाज आयी थी।

इन पाँचों गाँवों की क्रान्तिकारी भीड़ द्वारा उन अंग्रेजों में से 5 अंग्रेजों को नहर की पटरी पर कुछ–कुछ अन्तराल से मार दिया गया।[11] कहा जाता है कि ये अंग्रेज अत्यधिक बलशाली तथा हष्ट–पुष्ट थे। एक अंग्रेज इन गाँवों की क्रान्तिकारी भीड़ से बचने के लिए भागता हुआ 'छत्ता ('छत्ता' स्थान खिंदौड़ा–नागंल मार्ग पर पड़ता है। इस स्थान को छत्ता इसलिए कहा जाता है क्योंकि यहां कई नहरे एक दूसरे के ऊपर व नीचे से होकर जाती है) नामक स्थान पर पहुँचा। इस स्थान पर निकटवर्ती नांगल ग्राम का 'दीवान' नामक व्यक्ति जो जाति से धीवर था, घास काट रहा था। जब उस भागते हुए अंग्रेज ने घास काटते हुए उसे देखा तो उसने रुककर उससे कहा– 'बाबा मुझे बचा। मेरे पीछे भीड़ आ रही है। 'दीवान' ने उसे सिंचाई के लिए बनी नाली की तरफ इशारा करके कहा कि – 'भरे में लेट जा।' वह अंग्रेज उसमें लेट गया। उसके लेटने के पश्चात् दीवान ने उसके ऊपर पहले से काटी हुई घास डाल दी।[12]

जब कुछ समय पश्चात् क्रान्तिकारी ग्रामीण वहाँ से चले गये तब दीवान ने उस अंग्रेज को बाहर निकाला। यह जीवित बचने वाला अंग्रेज ओसबर्न (कैप्टन, 54 वीं सैनिक टुकड़ी) था।[13] इस प्रकार ग्रामीणों के साथ हुए संघर्ष में दिल्ली मैगजीन का विलोग्बी अपने चार साथियों बटलर (लेफ्टिनेंट, 54 वीं सैनिक टुकड़ी), स्टीवार्ट (दिल्ली कॉलेज) के साथ मारा गया।[14] सांयकाल में जब अन्धेरा हो गया तब दीवान ने कैप्टन ओसबर्न को निकटवर्ती नेकपुर गाँव मे 'हुसैनी' मुस्लिम दर्जी के पास पहुँचा दिया।

एक किंवदन्ती के अनुसार, जब दीवान कैप्टन ओसबर्न को बन्द पालकी में बैठाकर नेकपुर ले जा रहा था तब रास्ते में खिदौड़ा – गयासपुर मार्ग पडा। इस मार्ग पर एक विशाल बरगद का वृक्ष था जिसके नीचे कुछ ग्रामीण बैठकर बातचीत करते हुए आपस में उक्त घटना की चर्चा कर रहे थे। जब बन्द पालकी वहां से गुजरी तो ग्रामीणों ने दीवान को आवाज लगाकर कहा कि 'इस बन्द पालकी में कौन बैठा है ? तब उसने कहा कि 'मेरी घरवाली की तबीयत खराब है और मैं उसे नेकपुर में

हकीम के पास ले जा रहा हूँ। 'वहीं बन्द पालकी में बैठे ओसबर्न ने उन ग्रामीणों की बातो को सुना। जहाँ उसे मालूम हुआ कि उसके अंग्रेज साथियों को मारने में कुम्हैड़ा, खिंदौड़ा, गयासपुर, भनेड़ा व सुहाना के क्रान्तिकारी ग्राामीणो का हाथ था।[15] नेकपुर गाँव के हुसैनी दर्जी ने कैप्टन ओसबर्न को रात्रि के अंधेरे में ही धौलडी के सैयदों पास पहुँचा दिया।[16] यहाँ से कैप्टन ओसबर्न सकुशल लालकुर्ती, मेरठ, बूचड वालों के पास पहुंच गया। ये अंग्रेजी सेना को मांस की आपूर्ति करते थे। इन्होंने ओसबर्न को सकुशल अंग्रेज कलेक्टर, मेरठ के पास पहुँचा दिया।[17]

कैप्टन ओसबर्न की सूचना पर कुम्हैड़ा, खिंदौड़ा, भनेड़ा, सुहाना व गयासपुर गाँवों को बागी घोषित कर दिया गया।[18] इन पाँचों गाँवों की जमीन जब्त कर ली गयी। 1857 की घटना से पूर्व यहाँ के ग्रामीण स्वयं जमींदार थे परन्तु अब उन्हें काश्तकार बना दिया गया। अंग्रेजी शासन काल में इनका हर प्रकार से दमन किया गया।[19] परिणमतः इनकी आर्थिक स्थिती दयनीय हो गयी । समाज में इनकी प्रतिष्ठा गिर गयी जिससे यहाँ के लडके–लड़कियों के विवाह आदि में अत्यधिक बाधा आई।[20] आज भी यदा–कदा सार्वजनिक समारोहों में इन गाँवों के ग्रामीणों को 'बागी' कह दिया जाता है जिससे देश के प्रति इनके पूर्वजों के त्याग व प्रेम की भावना का उपहास उड़ाया जा रहा है। इससे वे स्वयं को अपमानित महसूस करते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

1857 की क्रान्ति के सन्दर्भ में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारी भरकम शोधात्मक कार्य होने के पश्चात भी ग्रामीण स्तर पर की गई भागीदारी को प्रकाश में लाया जाना शेष है। मेरठ मण्डल के कुम्हैड़ा, खिंदौड़ा, भनेड़ा, गयासपुर एवं सुहाना के ग्रामीणजन के द्वारा 1857 की क्रान्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई गई थी। प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य इन पाँचों गाँवों के ग्रामीणों के द्वारा की गई भागीदारी को प्रकाश में लाना है।

निष्कर्ष

मेरठ से क्रान्ति के प्रस्फुटन की सूचना बड़ी शीघ्रता के साथ जैसे ही निकटवर्ती गाँवों के ग्रामीणों को प्राप्त हुई तो उन्होंने भी अपनी तरह से क्रान्तिकारी घटनाओं को अंजाम देकर विदेशी शासन को कमजोर करने की कोशिश की। इस कड़ी में त्यागी बहुल खिदौड़ा, कुम्हैड़ा, भनेड़ा, सुहाना व गयासपुर गाँवों के ग्रामीणों ने दिल्ली मैगजीन के लेफ्टिनेंट विलोगबी सहित पाँच अंग्रेजों को मार गिराया।

प्रतिक्रान्ति के दौरान इन गाँवों को बागी घोषित कर दिया गया। उनकी जमीन छीन ली गयी। क्रान्ति से पूर्व में स्वयं जमींदार थे परन्तु उन्हें अब काश्तकार बना दिया गया। स्वतन्त्रता के पश्चात् भी यदा–कदा इन गाँवों के ग्रामीणों को बागी कहकर उनके पूर्वजों को देश प्रेम की भावना एवं त्याग का उपहास उडाया जाता है जो पूर्णतः निन्दा करने योग्य है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *सुन्दलाल : भारत में अंगरेज़ी राज, द्वितीय खण्ड, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली , 1970, पृ0 833। डॉ0 विघ्नेश कुमारः 1857 में मेरठ जनपद की भूमिका (ऐतिहासिक स्थलों के विशेष संदर्भ में) यू0जी0सी0; मध्य क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल द्वारा डॉ0 विघ्नेश कुमार, गवर्नमेन्ट कॉलेज कोटपुतली (जयपुर, राजस्थान) को प्रदत्त माइनर रिसर्च प्रोजेक्ट की रिपोर्ट (अप्रकाशित), पृ0 46।*
2. *एस0 एन0 सेनः अठारह सौ सत्तावन का स्वतंत्रता संग्राम, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली 1998, पृ0 9। सुन्दरलालः भारत में अंगरेज़ी राज, पूर्वोक्त।*
3. *वही।*
4. *एम0 एन0 सेन, पूर्वोक्त।*
5. *साक्षात्कार, दिनांक 18.06.04, श्री ओंकार त्यागी पुत्र स्व0 मुंशी पौत्र स्व0 श्री तोता, आयु 52 वर्ष, जाति त्यागी, ग्राम कुम्हैडा व श्री शिवचरण, आयु 56वर्ष जाति चारज, ग्राम कुम्हैड़ा। साक्षात्कार, दिनांक 12. 06.04 श्री ताराचन्द त्यागी (पूर्व प्रधान) पुत्र स्व0 श्री बलवन्त पौत्र स्व0 श्री चन्दन प्रपौत्र स्व0 श्री इन्दर, आयु 82 वर्ष, जाति त्यागी, ग्राम कुम्हैड़ा।*
6. *सक्षात्कार, दिनांक 10.06.04, श्री रामनिवास त्यागी पुत्र श्री देसराज, आयु 80 वर्ष , जाति त्यागी, ग्राम कुम्हैड़ा व श्री रामानन्द त्यागी पुत्र स्व0 श्री देसराज, आयु 70 वर्ष, जाति त्यागी, ग्राम कुम्हैड़ा।*
7. *वही।*
8. *साक्षात्कार, दिनांक 02.06.04, श्री सौराज पुत्र स्व0 श्री हजारीलाल, आयु 92 वर्ष, जाति त्यागी, ग्राम खिंदौड़ा व श्री नगेश त्यागी पुत्र स्व0 श्री महेन्द्र त्यागी, आयु 45 वर्ष, जाति त्यागी, ग्राम खिंदौड़ा।*
9. *साक्षात्कार, दिनांक 10.06.04, श्री राममेहर पुत्र स्व0 श्री रामप्रसाद, आयु 70 वर्ष, जाति यादव, ग्राम कुम्हैड़ा व श्री रामनिवास त्यागी, पूर्वोक्त।*
10. *साक्षात्कार, दिनांक 27.05.01, श्री छोटे पुत्र श्री हरस्वरुप , आयु 52 वर्ष, जाति चारज, ग्राम कुम्हैड़ा व श्री शिवचरण त्यागी, आयु 94 वर्ष जाति त्यागी, ग्राम कुम्हैड़ा।*
11. *एस0 एन0 सेनः पूर्वोक्त। साक्षात्कार के दौरान पाँचों गाँवों के ग्रामीणों ने इस तथ्य से अवगत कराया है।*
12. *साक्षात्कार , दिनांक 27.07.03, श्री रघुवर पुत्र स्व0 श्री भगवान सहाय, आयु 88 वर्ष, जाति त्यागी व श्री महेन्द्रपाल त्यागी (रिटायर्ड दरोगा, दिल्ली पुलिस), आयु 65 वर्ष, जाति त्यागी, वर्तमान निवास शिवपुरी, मोदीनगर।*
13. *एडविन टी0 एटकिन्सनः स्टेटिसटिकल, डिसक्रिप्टिव एण्ड हिस्टोरिकल एकाउन्ट ऑफ द नार्थ–वैस्टर्न प्रोविन्सेज ऑफ इण्डिया, वोल्यूम–3, मेरठ डिविजन, पार्ट–2, गोवर्नमेंट प्रेस, इलाहाबाद, 1876 पृ0 170।*
14. *एस0 एन0 सेनः पूर्वोक्त। एडविन टी0 एटकिन्सनः पूर्वोक्त।*
15. *साक्षात्कार, दिनांक 20.07.03, श्री हरवंश पुत्र स्व0 कूडे, आयु 88 वर्ष, जाति त्यागी, ग्राम खिंदौड़ा व श्री राजेन्द्र सिंह पुत्र श्री अतर सिंह, पौत्र स्व0 श्री नौरंग, आयु 50 वर्ष , जाति त्यागी, ग्राम खिंदौड़ा।*
16. *एच0आर0 नेविलः डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स ऑफ दि यूनाइटेड प्रोविन्सेज ऑफ आगरा एण्ड अवध, मेरठ*

डिस्ट्रिक्ट गवर्नमेंट प्रेस, यूनाईटेड प्रोविन्स, इलाहाबाद, 1903

17. *वही।*
18. *आचार्य दीपांकरः स्ववंत्रता आन्दोलन और मेरठ, जनमत प्रकाशन, मेरठ, प्रथम संस्करण, 1993, पृ0 143।*
19. *'अटल आवाज', हिन्दी साप्ताहिक, ग़ाजियाबाद, 13 अक्टूबर, 1988।*
20. *साक्षात्कार के दौरान पाँचो गाँवों के ग्रामीणों ने इस तथ्य का स्वीकार किया।*